

Newspaper Clips

April 18, 2013

Dainik Bhasker ND 18/04/2013

p-2

क्रेडिट घटाकर तनाव कम करने में जुटी आईआईटी

नई दिल्ली. आईआईटी छात्रों के पढ़ाई के तनाव को कम करने और मूल्यपरक शिक्षा देने के साथ अन्य गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए नया पाठ्यक्रम तैयार करने जा रही है। आईआईटी दिल्ली के निदेशक प्रो. आर.के.शेवगांवकर बताते हैं कि नया पाठ्यक्रम वर्ष 2013 से लागू होगा। बीटेक

■ बीटेक के नए
करिकुलम में
180 के बजाए
160 क्रेडिट

के नए करिकुलम में 180 के बजाए 160 क्रेडिट होंगे। इसके अलावा एमटेक कोर्स की पुरानी डिग्रियों को भी मार्केट की मांग के अनुरूप स्पेशलाइज्ड किया जा रहा है। स्पेशलाइजेशन के

हिसाब से डिग्री के नए नाम निर्धारित होंगे। एमटेक कोर्स में परिवर्तन पर भी काम जारी है। लेकिन नए सत्र से बीटेक का नया पाठ्यक्रम लागू होना तय है। नए सत्र के लिए जेईई एडवांस की परीक्षा 2 जून को होगी। परीक्षा केंद्र निर्धारित करने का काम 7 मई को जेईई मेंस का परिणाम घोषित होने के बाद होगा।

Deccan Hedrahd ND 18/04/2013 P2

IIT-Delhi students to showcase their smart ideas at open house

NEW DELHI, DHNS: Students and faculty displayed variety of projects from earthquake safety of household items, multi-functional wheelchair to technology to keep garments fresh at the ninth edition of Indian Institute of Technology-Delhi's open house.

Projects also included green power generation using diesel engines fuelled with biodiesel to Biosensor chip for analysis of pesticide residue, heavy metal and bacterial contamination in milk. They will be put up on public display on Saturday.

R K Shevgaonkar, IIT-D director said, "It gives me immense honour to announce the ninth edition of the 12Tech Open House exhibiting some of our history in science and technology contributions that retain the essence of promoting innovation and promises to be a real treat to the eyes of the tech-connoisseurs."

A number of projects offer green solutions. Waste water treatment project showed how microalgae can be used to meet

A number of projects offer green solutions. Waste water treatment project showed how microalgae can be used to meet the energy and waste water management needs of rural sector

the energy and waste water management needs of rural sector.

"Algae are considered as the best tool for waste water treatment along with production of biomass for biofuel application. Waste water was collected from a drainage line and a pond from village Mubarakpur in Haryana. We put three tested algae, which were able to bring waste water parameters below the dischargeable limits," said a student.

A project displayed environment-friendly preservation of bamboo species by using Tan-

nin, a powdery substance which is naturally present in plants and possesses antimicrobial properties.

The National Rural Housing Knowledge Network awarded by the ministry of rural development (MoRD) to develop user-friendly web-based portal of technology solutions for rural homeowners is in its final stage. "This will include a customised advisory on building technologies to meet the comfort and disaster safety requirements of specific geo-climatic zones of the country. The portal will be available to rural citizens, engineers in state housing departments, administrators implementing rural housing projects etc," said a student.

A multifunctional wheelchair has been created for navigation and will also help a differently abled person to use a western-style toilet. "Additional accessories like a table board, a cleaning brush could be attached to the main frame," said the teacher in-charge.

Business Line ND
18/04/2013 p-17

IIT Delhi to showcase 500 research projects

Indo Asian News Service
New Delhi, April 17

Five hundred research-based projects will be showcased at the Indian Institute of Technology (IIT) Delhi on Saturday.

The projects will be displayed at the I2 Tech 2013 Open House. They include innovative projects such as sensor chips to detect pesticide residue in milk, multi-functional wheelchairs and earthquake safety of household items, among others.

The biosensor chip will detect pesticides, heavy metal, aflatoxin and bacterial contamination in milk. Milk laboratories will be able to use this chip.

The I2 Tech 2013 Open House will provide a unique insight into the research-driven curriculum of IIT Delhi, the institute said.

"IIT Delhi will throw open its campus to all those who want to sample the innovations happening here," said IIT Delhi Director R.K. Shevgaonkar.

A live display of groundbreaking research projects, developed by students, staff and faculty, and a technical workshop by industry experts besides a guided tour of on-campus laboratories will be some of the highlights of the exhibition.

Indian Express ND
18/04/2013

P-3 ENL

IIT-Delhi to hold exhibition of innovative products on Saturday

EXPRESS NEWS SERVICE
NEW DELHI, APRIL 17

STUDENTS of IIT-Delhi will put on display a range of innovative projects — a bio-sensor technique for checking contamination in milk, safety of equipment during earthquakes, multi-functional wheelchair, among others — at the institute's annual exhibition on Saturday.

IIT-Delhi Director R K Shevgaonkar said, "It gives me immense pleasure to announce the ninth edition of the I2Tech Open House. It will have exhibits commemorating the history of our institution in field of science and technology, apart from innovative projects developed by students and faculty. These exhibits will be a real treat for tech-connoisseurs."

Using energy-dissipating cable, specially-designed rubber pads and a false floor, the project on ensuring safety of equipment and household items during an earthquake has received funding from Bhabha Atomic Research Centre.

"The idea is to develop technology which can protect equipment and household items during earthquakes," Vasant Matsagar, an IIT-Delhi faculty member who has been involved with the project, said.

"When an earthquake strikes, equipment used for CT scans and other instruments might fall or stop working. Our objective is to protect such products as well as household items. At our laboratories in IIT-Delhi, simulation techniques and lab-scale models of buildings were used to develop this technology."

In addition to this, the students also came up with a multi-functional wheelchair which was patented a month ago.

"What makes this project unique is the rotatable chair. This will aid physically disabled persons in navigation. The model has a seat which can be moved vertically and it is battery-operated," Anurag Kumar Singh, a second-year student of IIT-Delhi, said.

इस वीकेंड साइंस से करें दोस्ती

आईआईटी दिल्ली के ओपन हाउस में दिखेंगे अनोखे प्रोजेक्ट

राहुल मानव ॥ आईआईटी

साइंस की नॉलेज और टेक्नॉलजी के कॉम्बो से मिलने के लिए तैयार हो जाएं। कपड़ों के लिए फ्रेश एंड स्मार्ट टेक्नॉलजी जिनसे बैटरीया को खत्म किया जा सकता है। मल्टी फंक्शनल वील चेयर, सोलर इनर्जी इलेक्ट्रिसिटी बनाने की नई तकनीक, ऐसी ही कुछ नायाब चीजें आप शनिवार को होने वाले आईआईटी दिल्ली के आई-2 टैक- 2013 ओपन हाउस में जाकर देख सकते हैं। इसमें दिल्ली 100 कॉलेज और 200 स्कूल भी शामिल होंगे।



बड़े काम की वील चेयर

यह चेयर 180 डिग्री तक घूम जाती है। इसे वेस्टर्न टॉयलेट में यूज कर सकते हैं। इसमें लगे क्लीनिंग ब्रश से खुद साफ सफाई कर सकते हैं। 7 फुट की ऊंचाई तक चेयर जा सकती है। अंब्रेला भी लगा है। प्रोफेसर एस.एन. सिंह की गाइडेंस में एपलाइड मैकेनिक्स के स्टूडेंट अनुराग कुमार सिंह, अंसल ई. और मैकेनिकल इंजीनियरिंग के स्टूडेंट शफी ने इसे बनाया है। अगर ये मार्केट में आता है तो इसकी कीमत 10 हजार रुपये तक होगी। इसमें 12 वोल्ट की छोटी बैटरी लगती है।

सोलर एनर्जी की राश्टी तकनीक



सोलर एनर्जी से चलने वाले इस कॉन्सेप्ट को बनाने में 7 से 8 साल लगे हैं। सोलर इनर्जी से इलेक्ट्रिसिटी जनरेट की जाती है। मेथी, पुदीना, लाल मिर्च, जैसी सब्जियों को इस टेक्नॉलजी से सुखाने में मदद मिलती है। प्रोफेसर जी.एन. तिवारी ने इस प्रोजेक्ट को बनाया है। उनका कहना है इस तकनीक को बनाने में 15 हजार रुपये का खर्च आता है।

Photos: Rahul manav

डीजल इंजन के पॉल्यूशन पर कंट्रोल



डीजल इंजन से फैलने वाले एयर पलूशन में नाइट्रोजन और अन्य गैसों मौजूद होती हैं जिनसे एनवायरमेंट को काफी नुकसान होता है। आईआईटी के प्रोफेसर डॉ. के. ए. सुब्रमण्यम ने डीजल इंजन से फैलने वाली इन गैसों को कंट्रोल करने के लिए सीएनजी फ्यूल इंजेक्शन को डीजल फ्यूल इंजन के लिए विकसित किया है। इससे हवा में फैलने वाली जानलेवा गैसों को कंट्रोल किया जा सकेगा।



भूकंप में सुरक्षित रहेंगी कीमती चीजें

भूकंप से इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स को बचाने के लिए एनर्जी एबजॉर्बिंग डिवाइस बनाए गए हैं। इस प्रोजेक्ट को तैयार कर रहे प्रोफेसर डॉ. आर. आयोथीरमन के मुताबिक इलेक्ट्रॉनिक आइटम, म्यूजियम की खास मूर्तियां जैसी चीजें इस तकनीक से बचाई जा सकती हैं। भूकंप के इनर्जी को ये डिवाइस एबजॉर्ब कर लेते हैं।

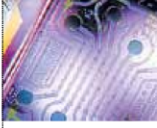
आईआईटी कैंपस में लगेगा आविष्कारों का मेला

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

आईआईटी दिल्ली का इनोवेशन वार्षिकोत्सव आई-टू टेक-2013, 20 अप्रैल से शुरू हो रहा है। इसमें छात्रों की 500 से ज्यादा आविष्कारों की प्रदर्शनी लगेगी। संस्थान के निदेशक प्रो. आरके शेवगांवकर ने यह जानकारी बुधवार को दी। इस अवसर पर डीन आईआरडी प्रो. सुनीत तुली, एफआईटीटी के एमडी डा. अनिल वाली के अलावा वरिष्ठ प्राध्यापकों में प्रो. मंजीत जस्सल, प्रो. शिवन किशन कौल मुख्य रूप से मौजूद थे।

दूध में मिलावट जांचने के लिए बायो सेंसर चिप

दूध में मिलावट और पेस्टिसाइड जांचने के लिए आईआईटी दिल्ली और बिटस पिलानी ने मिलकर एक बायो सेंसर चिप तैयार की है। चिप की कीमत तीन से पांच हजार रुपए के बीच आएगी। इस आविष्कार का अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्राप्त करने के लिए आस्ट्रेलिया में पीसीटी फाइल किया गया है। प्रोफेसर सुधीर चंद्रा बताते हैं कि पशुओं के चारे में कीटनाशक दवाओं का इस्तमाल होने से अक्सर दूध में पेस्टिसाइड मिलते हैं। इतना ही नहीं दूध में हैवी मेटल (केडियम, शीशा) और बैक्टीरिया भी होते हैं। उन्होंने बताया कि दूध में यूरिया और डिटर्जेंट की जांच के लिए नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट करवाल के प्राध्यापक डा. नरेश कुमार बायो चिप बनाने में लगे हैं।



भूकंप से बचाने के लिए फर्श की नई डिजाइन

आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर डा. वसंत मटसेगर बताते हैं कि भूकंप से बचाव के लिए दो प्रोजेक्ट हमने इस साल बनाए हैं। इसमें मकान का निर्माण करते समय कुछ बातों का ध्यान रखकर हम भूकंप की तबाही से बच सकते हैं। फर्श के अंदर रबड़ की सीट डालने से या फिर फर्श का डिजाइन बनाने समय उसमें स्लाइडिंग सरफेस रखने से ईरान में जैसा भूकंप आया था उसमें कंफन तक आपको महसूस नहीं होगा। स्लाइडिंग सरफेस या रबड़ सीट आधारित इन दोनों तकनीक पर मकान का निर्माण कराने से लागत में दस फीसदी की वृद्धि होगी।



ठंडे और अच्छे लुक देने वाले परिधान

प्रो. अश्विनी कुमार अग्रवाल ने बताया कि एनिसोट्रोपिक और आइसोट्रोपिक सिल्वर नेनोपार्टिकल्स तकनीक पर आधारित परिधानों का निर्माण आईआईटी ने किया है। इस कपड़े से बने परिधानों की बिक्री यूरोपियन देशों में हो रही है। अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला में इन कपड़ों की जांच के बाद आईको टेक्स सर्टिफिकेट हमें मिला है जो देश के किसी उत्पाद को पहली बार दिया गया है। ये कपड़े शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले नहीं हैं।



Dainik Jagran ND 18/04/2013

P-III(JCT)

आईआईटी के छात्र लगाएंगे मौलिक खोजों की प्रदर्शनी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली (आईआईटी) ने एक बार फिर सालाना ओपन हाउस, आई 2 टेक 2013 में अग्रगामी शोध आधारित अपने प्रोजेक्टों की बड़ी श्रृंखला प्रदर्शित करने की तैयारी कर ली है। आईआईटी दिल्ली की तरफ से बताया गया कि यहां के छात्र आई 2 टेक 2013 के तहत इनोवेटिव और व्यावसायिक रूप से व्यावहारिक

तकनीकी खोजों को प्रस्तुत करेंगे। यह आयोजन 20 अप्रैल को आईआईटी दिल्ली परिसर में होगा। आई 2 टेक 2013 ओपन हाउस एक अनोखा अवसर होता है जब आगंतुकों को आईआईटी दिल्ली के शोध उन्मुख पाठ्यक्रम को करीब से देखने-परखने का मौका मिलता है। इस खास प्रदर्शनी में विद्यार्थियों, कार्मिकों और शिक्षकों द्वारा विकसित शोध प्रोजेक्ट के लाइव डिस्प्ले के

साथ-साथ इंडस्ट्री एक्सपर्ट द्वारा आयोजित तकनीकी कार्यशालाएं होंगी। आईआईटी दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर आर.के. शेवगांवकर ने बताया कि 'इस बार भी आईआईटी दिल्ली के छात्र अपनी नई खोजों को लोगों को दिखाएंगे। आई 2 टेक 2013 ओपन हाउस का नवां आयोजन छात्रों की नई ऊर्जा और विचार को भी सामने रखेगा।

भूकंप से महफूज होंगी महंगी चीजें

आईआईटी दिल्ली के सिविल इंजीनियरिंग विभाग ने तैयार की तकनीक

जी. पाल

● अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। आने वाले वक्त में भूकंप के झटके महसूस नहीं होंगे। आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसरों और छात्रों ने भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर के सहयोग से कीमती घरेलू सामानों को बचाने की तकनीक तैयार की है। इस तकनीकों से 7-8 तीव्रता वाले भूकंप से घरेलू कीमती चीजों को बचाया जा सकेगा।

सिविल इंजीनियरिंग विभाग के डॉक्टर वसंत मतसागर, डॉक्टर अयोथी रमन और पीएचडी के छात्र प्रवीन जगताप ने तीन तरह की तकनीकें विकसित की हैं। इसके लिए भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर ने 24 लाख दिए हैं। डॉक्टर मतसागर ने बताया कि भूकंप के झटकों से सामान की सुरक्षा के लिए एनर्जी डिस्पीट वायर, स्लाइडिंग सर्फेस और रबर पैड की तकनीकें तैयार की गई हैं। इनसे रिक्टर पैमाने पर 7 से 8 तीव्रता वाले भूकंप से भी उसमें रखे सामान को सुरक्षित रखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि एनर्जी डिस्पीट वायर तकनीक में कंपन वायर में चला जाता है। वहीं स्लाइडिंग सर्फेस तकनीक में बने फाल्स फ्लोर के मूव करने से कमरे में रखे सामान पर असर नहीं होगा। रबर पैड का मैकेनिज्म थोड़ा अलग है। मान लीजिए किसी कंप्यूटर रूम में रबर पैड लगा हो तो रबर ऊर्जा

- भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर से प्रोजेक्ट के लिए मिले 24 लाख
- एनर्जी डिस्पीट वायर तकनीक का इस्तेमाल

को सोख लेगा और रबर में मौजूद लचीलापन कंपन को ऊपर नहीं आने देगा इससे वस्तुओं पर असर कम होगा। डॉक्टर मतसागर ने बताया कि प्रोजेक्ट में दो साल का काम हो चुका है और अभी तकनीक की पहाड़ी, रेतीली और मैदानी जमीन पर टेस्टिंग की जा रही है।

जल भराव से निजात दिलाने की कोशिश

वाटर ड्रेनेज सिस्टम को ठीक करने के लिए भी दिल्ली सरकार के बाद एवं सिंचाई नियंत्रण विभाग के साथ मिलकर आईआईटी दिल्ली काम कर रहा है। सिविल इंजीनियर डिपार्टमेंट एक प्रोजेक्ट के तहत काम कर रहा है। जिसके लगभग एक साल में पूरा होने की उम्मीद है।



बॉयो डीजल-सीएनजी से चलने वाला ग्रीन पावर जनरेटर।

दूध की जांच चिप से

दूध में मौजूद बैक्टीरिया की पहचान अब एक चिप से तैयार तकनीक करेगी। लेड, मरकरी, कैडमियम और बैक्टीरिया की दूध में पहचान के लिए आईआईटी दिल्ली, बिटस गोवा, एनडीआरआई करनाल और पंजाब यूनिवर्सिटी ने मिलकर यह तकनीक तैयार की है। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च ऑफ इंडिया के एनएआईटी प्रोजेक्ट के तहत आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर सुधीर चंद्रा, बिटस गोवा के प्रोफेसर सुनील, एनडीआरआई से डॉक्टर नरेश कुमार, पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला से प्रोफेसर नीलम वर्मा इस काम से जुड़े हैं।

मल्टीपरपज व्हीलचेयर

आईआईटी दिल्ली के एप्लॉयड मेकेनिक्स विभाग के प्रोफेसर एसएन सिंह के नेतृत्व वाली टीम ने मल्टीपरपज व्हीलचेयर तैयार की है। इसकी खास बात यह है कि इसपर बैठा अशक्त व्यक्ति बैठे-बैठे ही पश्चिमी टॉयलेट का इस्तेमाल कर सकेगा। इसको तैयार करने वाली टीम के सदस्य अनुराग कुमार सिंह ने बताया कि इसकी दो बातें खास हैं। व्यक्ति जब टॉयलेट में जाएगा तो इलेक्ट्रॉनिक तरीके से व्हीलचेयर के नीचे की शीट हट जाएगी। इसके साथ ही इसमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि यह ऊपर भी उठ जाएगी। इससे अशक्त व्यक्ति चेयर पर बैठे-बैठे ही ऊंचाई पर रखी चीज को बिना की मदद से उठा सकेगा।

आईआईटी का आई2टेक फेस्ट 20 को

नई दिल्ली (ब्यूरो)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली में आई2टेक फेस्ट की एक बार फिर धूम होगी। आईआईटी दिल्ली के वार्षिक ओपन हाउस 'आई2टेक-2013' में 20 अप्रैल को नए शोध और परियोजनाओं को पेश किया जाएगा। इस ओपन हाउस में आईआईटी के दर्जनों वैज्ञानिक और छात्र-छात्राएं अपने नए आविष्कारों को पेश करेंगे। फेस्ट का मुख्य आकर्षण ऑन कैम्पस लैबोरेटरी की प्रदर्शनी होगी। आई2टेक फेस्ट 2013 का औपचारिक ऐलान करते हुए आईआईटी दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर आरके शेवगांवकर ने बताया कि छात्रों और युवाओं के बीच विज्ञान व तकनीक के प्रति रुचि पैदा करने के लिए इस तरह के आयोजन बहुत जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि देश के प्रतिष्ठित संस्थान होने के नाते उनकी यह जिम्मेदारी है कि देश के युवाओं को नए आविष्कारों के प्रति जागरूक करें।

Hindustan Times ND 18/04/2013 p-9

IIT-D allows students to innovate beyond syllabus

NEW THINKING Institute to include credits for work outside curriculum, give choice from varied disciplines

HT Correspondent

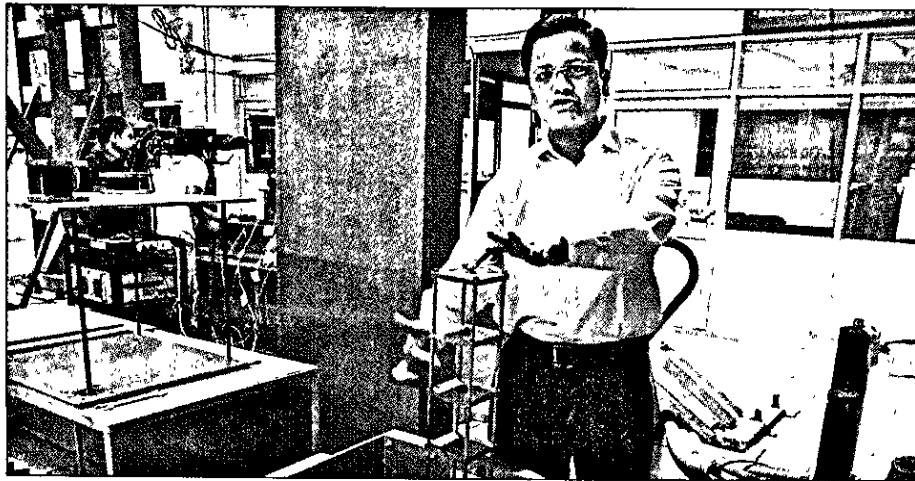
#htreporters@hindustantimes.com

NEW DELHI: The Indian Institute of Technology (IIT)-Delhi will soon set up an innovation centre to give its students the freedom to try out new things and ideas, free from the trappings of syllabus and curriculum.

The premier institute is all ready to set up a centre with funding from alumni and the ministry of human resource development that will give students the opportunity to explore ideas and innovations beyond the classroom.

"We want to give the students a chance to work on their ideas outside the classroom, beyond the constant pressure of grades and assignments. We want to give them space and freedom to innovate," said RK Shevgaonkar, director, IIT Delhi.

The institute is also working on their curriculum to include 20 credits for work outside the curriculum. "Students will be given the flexibility to choose from



• Vasant Matsagar demonstrates a device that protects equipment during tremors. SANJEEV VERMA/HT PHOTO

other disciplines and engineering disciplines. They will also be free to choose topics from the social sciences," he added. Shevgaonkar was speaking at the preview of the 9th open house that showcases students' innovations. The exhibit will be thrown open to

public on Saturday. This year, more than 500 projects will be on display. Some of these include projects on saving crucial technology and precious items from harm during earthquakes, a multi-purpose wheelchair, a biochip for testing milk purity and a technology

for fresh and cool garments. The multi-purpose wheelchair, made by the applied mechanics department, will make Western toilets more accessible to users. It also has an adjustable seat that can give the user elevation and can help them access things at a height of up to 7 feet.

Tech guard against tremors

The civil engineering department of the institute has come up with methods to protect communication servers, CT scan machines, incubators and other precious items in hospitals at the time of earthquakes.

According to Dr Vasant Matsagar, these objects can be mounted on sliding frames, energy dissipating rubber pads and energy dissipating cables to reduce the impact.

"It takes away the force of the earthquake and leaves behind just a harmless horizontal motion. At times of crisis, the communication servers topple over, snapping communication lines," Dr Matsagar said. **HTC**

जलभराव से निपटेंगे आईआईटी के छात्र-फैकल्टी

राकेश नाथ/एसएनबी

नई दिल्ली। राजधानी में जलभराव की समस्या से निपटने में भले ही सरकार फेल साबित हुई हो, लेकिन इस समस्या का निदान अब भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली द्वारा निकाला जा रहा है। यदि सबकुछ ठीक ठाक रहा तो अगले साल तक दिल्ली में जलभराव की समस्या से निपटने का हल निकाल लिया जाएगा। आईआईटी दिल्ली के सिविल इंजीनियरिंग विभाग की फैकल्टी-स्टूडेंट्स की टीम वर्ष 2035 तक का ड्रेनेज का मास्टर प्लान बना रही है। आईआईटी दिल्ली के सिविल इंजीनियरिंग विभाग को यह प्रोजेक्ट दिल्ली सरकार के सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने दिया है।

विभाग के प्रो. एके गोसांई ने बताया कि विभाग के फैकल्टी सदस्य व स्टूडेंट्स इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। अगले साल तक यह प्रोजेक्ट तैयार हो जाएगा। हमें पूरी आशा है कि दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में होने वाले जलभराव से निपटने का रास्ता निकाल लिया जाएगा। फिलहाल प्रोजेक्ट के तहत दिल्ली के अलग-अलग इलाको में होने वाले जलभराव की समस्या का गहन

- ▶ ड्रेनेज 2035 तक का मास्टर प्लान बना रहा है आईआईटी दिल्ली
- ▶ दिल्ली सरकार से मिला है यह प्रोजेक्ट, अगले एक साल में तैयार कर लिया जाएगा

अध्ययन किया जा रहा है। यह पता लगाया जा रहा है कि समस्या की असली वजह क्या है। इसे किस तरह से दूर किया जाए, इस पर भी शोध चल रहा है। उन्होंने बताया कि हर जगह जलभराव होने के अलग-अलग कारण हैं। कहीं निकासी व्यवस्था ठीक नहीं है, तो कहीं सड़क या गली समतल नहीं है। इस कार्य में करीब 30 से 40 स्टूडेंट्स व पांच फैकल्टी सदस्य जुटे हैं। प्रो. गोसांई के मुताबिक, इस प्रोजेक्ट से आम लोगों को भी जोड़ा जाएगा। प्रोजेक्ट के तहत ज्योग्राफिकल इन्फॉर्मेशन सिस्टम (जीआईएस) के जरिए दिल्लीवासियों को एक सुविधा मिलेगी, जिसकी सहायता से वे अपने यहां के जलभराव की फोटो वेबसाइट पर अपलोड कर देंगे। इस फोटो को देखकर सॉफ्टवेयर की मदद से वहां की समस्या का हल निकाला जाएगा। संबंधित सरकारी एजेंसी को भी पता चल जाएगा कि किसी भी इलाके में आखिर क्यों जलभराव हो रहा है और इसे कैसे दूर करना है। बुधवार को विभिन्न सरकारी एजेंसियों मसलन डीडीए, पीडब्ल्यूडी, एमसीडी व दिल्ली जल बोर्ड आदि के साथ आईआईटी की इस टीम की बैठक भी हुई। इसमें जलभराव से जुड़े आंकड़ों पर विचार किया गया।

Business Standard ND 18/04/2013 p-12

IIT, engineering faculties to go for summer classes at companies

Panel suggests step to boost industry-academia interface; MHRD to fund scheme

KALPANA PATHAK
& VINAY UMARJI
Mumbai/Ahmedabad, 17 April

From next year, professors at engineering institutions would be in for a busy summer.

A task force has suggested the faculty research with industry and take part in interactions with companies during the summer.

"We will introduce this process next year," said Devang Khakhar, director, IIT-Bombay. "Right now, the time is too short, as most faculty member would have made plans (for summer)."

To improve academia-industry interface, the task force on research, innovation and entrepreneurship suggested that 10 faculty members in each institution (100 to begin with) be selected for the summer sabbatical at companies. It has been suggested that around 1,000 courses be taught to faculty in 10-15 lectures delivered

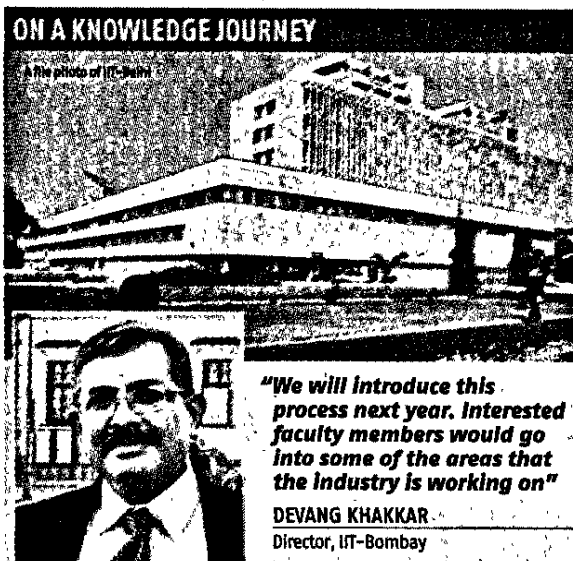
by industry representatives via video or in person.

To begin with, the premier Indian Institutes of Technology (IITs) would be part of this project.

"Interested faculty members would go into some of the areas industry is working on. It is an exposure for the faculty and allows for joint research or contributes to research, facilitating the institute and industry," Khakhar said. Khakhar is part of the task force. The panel is headed by Hari Bharti, co-chairman & managing director, Jubilant Life Sciences, and Ashok Jhunjhunwala, professor, IIT-Madras.

Industry personnel would visit and interact with faculty and students. Senior faculty would visit industry for lectures and interactions, according to the suggestions.

An academia-industry council would be created for each group of 100 institutions. Industry and academia will



each nominate five people to the council. The pilot project would be later spread to more than 3,000 engineering institutions and 30,000 colleges across the country, Khakhar added.

The council aims to stimulate joint research and development collaboration, foster entrepreneurship and create a culture of innovation.

An IIT director who was part

of the task force said: "It will not just be limited to a few large institutions, though we may begin with 100 institutions. The basic idea is that the industry-academia interface should improve for every institution that is picked."

As part of this initiative, the task force is also looking at tapping funds and schemes from the government and industry alike. The Ministry of Human Resource Development (MHRD) will provide the financial support to the institutions. It had recently announced setting up an incubation fund.

During a meeting between MHRD officials, and representatives of the Confederation of Indian Industry and IITs this week, the ministry said it would look at infusing ₹10 crore per annum for 25 of the initial 100 institutes. Seventy-five would see an infusion of ₹5 crore through the incubation fund, according to a presentation made by Jhunjhunwala.

Times Of India ND 18/04/2013 P-19

Twin spacecraft mission for a close look at sun

One To Act As Solar Blocker, Other To Study Corona

London: In a world first, ESA aims to launch a satellite project in 2017 where two spacecraft can move as one single object, achieving sub-millimetre precision, with a launch vehicle from India emerging as a possible choice. The new European Space Agency (ESA) mission includes two satellites weighing approximately 340kg and 200kg to be launched in 2017.

Several launchers are being evaluated, including one from India and another from the US — and they will travel jointly attached together until they separate in a highly-eccentric orbit. The Scientific Information and News Service (SINC) in Spain reported.

Their nearest point, the perigee, will only be 600 km from Earth. Every time they pass through this zone they will be in free flight, but under well controlled trajectories. The operations will take place on the most distant section of the orbit, the apogee, over 60,000 km away, as here the gravitational disturbances are minimized.

One of the relevant experiments including scientific application of Proba-3 will be blocking out the sun with one of the craft in such a way that the other, 150 metre away, can examine the sun's corona in unprecedented detail. The first satellite, the blocker, will create an artificial solar eclipse in order to facilitate its companion satellite, the coronagraph, in gathering the data.

Rendezvous tests will also be performed and could be applied to missions to Mars. PTI

© Bureau L.A. Collection/Sygma/Corbis



JOURNEY TO THE RED PLANET

For first 501-day voyage to Mars, adventurous couples unleash a deluge of applications

Applications are already pouring in for the ambitious Mars mission that aims to send an adventurous duo — a man and a woman — on a 501-day-long flyby around the Red planet in January 2018. Millionaire Dennis Tito, who became the first space tourist in 2001, had unveiled the Inspiration Mars' "Mission for America" in February this year. Applications are now rolling in from enthusiasts, despite the fact that the selected couple may be crammed into a space the size of a recreational vehicle for more than a year, breathing recycled air, subsisting on dehydrated food and drinking their purified urine, 'LiveScience' reported. "We've already had a tonne of applications," said Jane Poynter, president of the Paragon Space Development Corp, which has partnered with Inspiration Mars Foundation for the mission. "Some of them are kind of interesting, but please don't send your applications just yet. We're not announcing that we're taking applications!" Poynter said. Tito unveiled the plan to launch the first manned mission to Mars in 2018, a voyage that could include an adventurous married crew. The project aims not to land people on the surface of the Red Planet, but to take advantage of a rare planetary alignment that would allow a relatively easy, quick flyby around the Mars. PTI

HT Lucknow

Sangal takes charge as IIT-BHU director

VARANASI: Prof Rajeev Sangal, new director of the Indian Institute of Technology (IIT), Banaras Hindu University (BHU), will keep students' interest as his top most priority and wants to work in coordination with the BHU administration. Prof Sangal joined as director of the IIT-BHU on Tuesday night. He took charge from Prof Dhananjay Pandey, who is faculty member of the IITBHU.